जयप्रकाश कर्दम के 'छप्पर' उपन्यास में चित्रित दलित चेतना

प्रा. डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात,
आदर्श कॉलेज विटा,

हिंदी साहित्य की प्रत्येक विधा में दलित जीवन का चित्रण चित्रित हुआ है। हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन का समग्र रूप दिखाई देता है। दलित जीवन की समस्याएँ, दलितों का शोषण, दलितों के साथ किए जानेवाले अमानवीय व्यवहार आदि बातों की अभिव्यक्ति और इसके खिलाफ दलितो में हुई जागृति के कारण संघर्ष करने के लिए चेतित हुए दलितों का भी चित्रण हिंदी उपन्यासों में प्रकट हुआ है। दलित साहित्य जगत के सशक्त हस्ताक्षर एवं सामाजिक विचार के व्यवहारिक चिंतक जयप्रकाश कर्दम द्वारा लिखित 'छप्पर' उपन्यास हमें सुवर्ण अवर्ण की सामाजिक स्थिति से ही नहीं बल्कि भारतीय समाज के मुलभूत ढाँचेसे परिचित कराती है। जिसका आधार वर्णव्यवस्था और जातिवाद है । भारतीय समाज में एक ओर उँचेस्थान पर सवर्ण जातियाँ है तो दूसरी ओर सबसे निम्न स्थान पर दलित जातियाँ है। हमारी समाज व्यवस्था सवर्ण-अवर्ण, उँच-नीच और जातिगत भेदभाव पर विभाजीत है।

'छप्पर' उपन्यास का सुक्खा चमार जाति का है। वह अल्पभूधारक और किसान मजदूर है। वह अपने इकलौते बेटे चंदन को शहर भेजकर पढा-लिखाकर उसे डॉक्टर बाबू बनाने का सपना देखता है। साथ ही वह यह भी चाहता है कि उसका चंदन बडा आदमी बने और धन संचय करके कार आदि खरीदकर उसे और माँ रमिया को उसमे बिठाकर घुमाए।

चंदन उच्च शिक्षा प्राप्त करते समय विभिन्न संघर्षो से गुजरता है। उसके माता-पिता को कष्ट सहना पडता है और न जाने कितने अत्याचारों का सामना करना पडता है। उपन्यासकार ने अपनी लेखनी के माध्यम से दलित जीवन के विभिन्न पहलुओं को भयावहता के साथ प्रस्तुत किया है। चंदन शिक्षा के माध्यम से परिवर्तन लाता है। सुक्खा और रमिया सामाजिक परिवर्तन में जुटे अपने बेटे चंदन को पूर्ण सहयोग करते है। सुक्खा चंदन के भविष्य के प्रति आशावादी है। वह पत्नी रमिया के संदेह को दूर करते हुए कहता है।- ''चूप रह पगली कोई पेट से बडा बनकर आता है, पढ-लिखकर बडे बनते हैं सब। क्या पता कल को हमारा चंदन भी कलेक्टर या दरोगा बन जाए। अपनी चिंता छोड हमे थोडे दुःख उठाने पड रह है। तो क्या? दुःख के बाद ही सुख आता है। हमारे दिन कभी न कभी बहुरंगे।''[१] ब्राम्हणी समाज व्यवस्था ने आज हमारे जीवन में कितना अधिपत्य कर लिया है इसका एहसास पंडितजी के व्यक्तित्व के माध्यम से लेखक ने किया है। चंदन जब पढाई करने के लिए शहर जाता है तो उच्च वर्ग में हलचल मच जाती है। क्योंकि शिक्षा का अधिकार केवल सवर्णों को ही है। पंडित काणे और हरनाम ठाकूर दोनो मिलकर चंदन की शिक्षा में बाधा उत्पन्न करना चाहते हैं। वे सुक्खा चमार को यथास्थिती अपने पुत्र को वापस बुलाने के लिए मजबूर करते है और इसी मे तुम्हारी भलाई है ऐसा कहकर सुक्खा की नाकाबंदी की जाती है। चौपाल पर भरे पंचायत में सुक्खा के लिए अन्यायकारक फैसला किया जाता है ''सुक्खा को खेत-क्यार में घुसाने न दिया जाए न उसे किसी डौले-चक रोड से घास खरीदने दी जाय और न उसे लाई-पताई या मजदूरी के लिए बुलाया जाए। अब देखते है कि कैसे पढाता है सुक्खा अपने बेटे को।[२]

इस तरह गाँव के पंडित और चौधरी चंदन के दुश्मन बन जाते हैं और सुक्खा को धमकाते रहते हैं। लेकिन सुक्खा ने मन ही मन फैसला कर लिया कि वह किसी भी हालत में चंदन की पढाई नहीं छुडवायेगा और न ही उसे वापस गाँव बुलायेगा। गाँव पंचायत चौधरी और पंडित की शिक्षा के प्रति दुर्भावना से जमींदार की बेटी रजनी अपने पिता को समझाती है कि अब गाँव का गरीब मजदूर भी शोषण और अत्याचार के बंधन से मुक्त होकर अपनी स्वेच्छानुसार विकास की ओर बढाना चाहता है। समय के इस बदलाव को देखते हुए आपके लिए यही उचित है और आवश्यक है कि आप भी अपने आपको बदले और न केवल शोषण की प्रवृत्ति का त्याग करे स्वतंत्र और स्वावलंबी बनने में उनकी मदद करें। ''रजनी पढी लिखी है वह जानती है कि अब शोषण और अत्याचार का समय नहीं है। क्योंकि दलित वर्ग अपने अपमान और शोषण की जंजीरो को तोडने में सक्षम हो गये है।''[३]

काणा पंडित की मान्यता है कि निम्नवर्ग के लडके अगर पढ-लिखकर ज्ञानी हो जाए तो जातियता नष्ट हो जायेगी, धर्मशास्त्रों का विरोध होगा। अपने आक्रोश को व्यक्त करता हुआ वह कहता है - ये मिटायेंगे सब का भेद। ऐसा कैसे हो सकता है, कैसे बराबर हो सकते है ब्राम्हण और भंगी अब? हिंदू धर्म शास्त्रों के बल पर भेदभाव का धंदा चलाने वालों की दोगली नीति का पर्दाफाश चंदन करता है। वह डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के दलित चेतना के मंत्र से प्रभावित होकर 'सिखो संघटीत बनो और संघर्ष करो' का मूलमंत्र स्विकारता है, और शोषण करने वालो को विद्रोही कहकर नकारता है। उसका व्यक्तित्व संघर्षशील है। जब सवर्णों द्वारा यज्ञ का आयोजन किया जाता है तब चंदन कहता है-यह मान्यता गलत है कि यज्ञ-वज्ञ से कुछ नहीं होने वाला है। दूनिया में ऐसा कोई देवता या भगवान या नहीं है। इस प्रकार लोंगो को वह लोगों को समझाता है कि मान्सून का इंतजार करो। यज्ञ से कोई लाभ नहीं हो सकता है।

चंदन दलित और निम्न वर्गीय समाज में सुधार लाना चाहता है। वह सवर्णो के विरोध में जाकर लोगों की सोई हुई आत्मा जगाता है। उनमें विश्वास उपजता है और उन्हें समझाते हुए कहता है- 'तुम लोग सच्चाईको जानो और समझो तथा ऐसे काम करो जिनसे तुम्हारा भला हो सके। इन यज्ञ-अनुष्ठानों पर किया गया खर्च कहाँ लगेगा? उसका क्या लाभ होगा। बेहतर हो कि इतना पैसा समाज-सुधार के लिए दूसरे समाजोपयोगी कार्यो पर खर्च किया जाए। इस पाखंड को लेखक ने बहुत ही सशक्त शब्दों में तोडा है। शिक्षित हो जाने के बाद जागरूकता की भावना निर्माण होती है और मनुष्य अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग होने लगता है। दलित जीवन के वर्णव्यवस्था और रूढिवादी परंपराओं ने कई वर्षों तक या कई सदियों तक दबा कर रखा उनका शोषण किया और आज भी उत्पीडन शुरू है।

आने वाली पीढि के भविष्य के प्रति चिंतित दलित उनकी खुशायाली के लिए शिक्षा ग्रहण करने पर बल देते है। क्योंकि यह सच है कि शिक्षा मनुष्य के मन से भय भगाती है और अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए तत्पर करती है। सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक न्याय की कामना दलित नेतृत्व में चेतना जाग गई है। छप्पर उपन्यास का नायक चंदन कहता है कि-मै अपनी शिक्षा का उपयोग दलित और दीन-हीन समाज के उत्थान के लिए करूँगा। स्कूल खोलूँगा और इन गरिबों के रेत-मिट्टी में खेलते बच्चों को पढाउँगा।

जयप्रकाश कर्दम दलितों के लिए शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि ''शिक्षा से ही सोये हुए दलितों में जागृती हो तभी वे शोषण की बेडीयाँ तोड पायेंगे। बिना शिक्षा के दलित समाज के लोगों की मूक जबान को वाणी नहीं मिलेगी। इसलिए तो चंदन शिक्षा के साथ-साथ संगठन और संघर्ष पर जोर देते हुए दलितों को संबोधित करता है हमें समाज से टक्कर लेनी है, सत्ता से लडाई लडनी है, जुल्म और शोषण के विरूद्ध संघर्ष करना है। एक-दो आदमीयों के बस का नहीं है यह काम। बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समाज के हित और उत्थान के लिए आगे आना पडेगा, तभी लोगों के कष्ट और दुःख दूर होंगे। शोषण से मुक्ति मिलेगी तथा सुख और सम्मान से जीने के अवसर मिलेंगे। यह बिना शिक्षा से संभव नहीं है।

छप्पर उपन्यास की पृष्ठभूमी सामाजिकता से जुडी हुई है। उपन्यास का नायक चंदन आर्थिक दृष्टि से संपन्नता पर जोर देते हुए कहता है कि जिनकी आमदनी कम होगी, वे लोग और ज्यादा मेहनत करके ओवर टाईम आदि करके अपनी आमदनी बढा सकते है। आप लोगों को चाहे रूखी रोटी खानी पडे एक रोटी कम खाने को मिले या एक टाईम भूखा भी रहना पडे, लेकिन यदि आप अपने इस निश्चय पर दृढ रहे कि आपको अपने बच्चों को पढाना हो।

रजनी जमींदार हरनामसिंग की इकलौती बेटी है। जो स्वतंत्रता और समानता का पक्ष लेकर अपने पिता से लोहा लेकर चंदन का साथ देती है। वह चंदन से प्रेम भी करती है। इसीलिए वह जाति बंधन को तोडकर दलित चंदन से शादी करना चाहती है। किंतु चंदन उसे समझाता है और अपने व्यक्तिगत हित को त्यागकर समाज के लिए अपने प्रेम को कुर्बान कर देता है। इससे हरनामसिंह के हृदय में परिवर्तन होता है, और वे एक दिन आत्मग्लानी के चरम क्षणों में आत्महत्या करने के लिए जंगल की ओर जाते है। ठीक उसी समय सुक्खा भी किसी कार्य हेतू वहाँ गया था। जब हरनामसिंह ठाकूर कुएँ की तरफ जल्दी-जल्दी भागते हुए जाते हैं तो सुक्खा उसके इरादे को पहचान जाते है और उसे कुएँ में कुदने से बचा लेते है। हरनामसिंह अपने आपको सुक्खा की पकड से छुडाना चाहतें है और कुएँ में कुदना चाहतें हैं। उसी समय सुक्खा उसे बचा लेते है। सुक्खा उसे समझाते हुए कहते हैं कि ऐसा नहीं करते ठाकूर साहब। गलती तो इंसान का स्वाभाविक धर्म

है। दूनिया में ऐसा कोई नहीं मिलेगा जिससे कभी कोई गलती नहीं हुई हो। अतीत की इन सब बातों को भूल चुकें है हम लोग। आपके प्रति कोई मैल नही है हमारे मन में आप भी सब कुछ भूल जाए ठाकूर साहब और समानता का व्यवहार करते हुए प्यार मुहब्बत और भाई चारे के साथ रहिए सबके साथ।

सुक्खा के इस नम्रता और समानतावादी दृष्टीकोण से ठाकुर हरनामसिंह के मन में मानवतावादी दृष्टीकोण का उदय होता है। वह सुक्खा से कहता है, देखो सुक्खा। बराबरी का मतलब है हर क्षेत्र में बराबरी। मान-सम्मान का ढंग भी बराबरी का होना चाहिए। मैं नहीं चाहता कि हमारे बीच अब किसी तरह का अलाव अथवा असमानता रहे। मनुष्यता ही हमारा गोत्र हो, मनुष्यता ही हतारी जाति और मनुष्यता ही हमारा धर्म हो।

इसप्रकार लेखक ने अहिंसक ढंग से सामाजिक शक्तियों द्वारा परंपरावादी ताकतों का हृदय परिवर्तनकर सामाजिक क्रांति लाने का संदेश 'छप्पर' उपन्यास के माध्यम से दिया है। लेखक ने सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना के साथ ही राजनीतिक चेतना के स्वर को भी बुलंद करने का प्रयास किया है। उपन्यास के नायक चंदन ने अपने सामाजिक चेतना के स्वर को भी बुलंद करने का प्रयास किया है। उपन्यास का नायक चंदन अपने सामाजिक दायित्व को पहचानता है इसीलिए वह समाज की भलाई के लिए प्रयत्नशील है। वह पढ-लिखकर स्कूल खोलना, रोजगार उपलब्ध करना, दलित और झोंपडीओं में रहनेवाले बच्चों को शिक्षित करने का सपना भी देखता है। बाबासाहब आंबेडकर के 'सीखो, संघटीत बनो और संघर्ष करो।' के नारे को वह घर-घर तक पहुँचाना चाहता है। राजनिती के दाँव-पेच भी वह जानता है। वह चेतीत होकर कहता है- ''मैं वाणी दूँगा उनकी मुक जबान को। पढ-लिखकर हमारे समाज के लोग उपर नहीं उठेंगे। तो हमें ही कौन सुनेगा। हमारी चीख को हमे समाज से टक्कर लेनी है। सत्ता से लडाई लडनी है, जुल्म और शोषण विरूद्ध संघर्ष करना है हम सबके लिए फौज चाहिए, फौज तैयार करूँगा मैं।[४] चंदन का यह संकल्प दलित चेतना का मुख्य स्वर बन जाता है। वह सांसद महोदया से मिलना और भारतीय राजनीति में अपने अस्तित्व को दिखाना चाहता है। उसका यह स्वर सामाजिक परिवर्तन से जुडा होकर राजनीतिक चेतना का प्रतीक भी है।

निष्कर्ष :-

जयप्रकाश कर्दम जी ने छप्पर उपन्यास के माध्यम से दलित वर्ग में चेतना जागृत कर उच्चवर्णीय द्वारा होनेवाले शोषण पर रोक लगाई है। जिस गाँव में छुआछूत को धार्मिक आदेश माना जाता था उसी गाँव में सभी जातियों के लोग बिना किसी भेदभाव के एक दूसरे के साथ रहने लगे है। जिस मातापूर गाँव में दलित जाति का दूल्हा घोडी पर बैठकर बॅन्ड बाजे के साथ नही निकला था आज वही चमार से भंगी तक सब दलित की बाराते धूम-धडाके के साथ निकल रही थी। दलित युवक चंदन को शिक्षा ने संघर्षशील बनाया। उसने संघर्षशील बनकर समस्त समाज में क्रांति की चेतना जागृत की। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने आत्मशोध और आत्मबोध के द्वारा दलित जीवन को क्रांतिकारी रूप देने का प्रयास किया है। सवर्ण ठाकूर भी परिवर्तन को स्वीकार करता है और जाति-पाँति के भेदभाव को भूल जाता है। दलित सुक्खा सवर्ण ठाकूर द्वारा हुए अत्याचार को भूलकर उन्हे माफ कर देता है। ठाकूर की लडकी रजनी दलित चंदन से प्रेम कर संपूर्ण जातिव्यवस्था को समाप्त करती है और इन्सानियत और मानवतावाद को स्वीकारती है। उपन्यास का नायक चंदन शिक्षा प्राप्त कर स्वयंपूर्ण बनता है और दलित सवर्ण समाज में जागृकता लाता है।

संदर्भ : -

१. जयप्रकाश कर्दम - छप्पर - पृ. १३
२. वही - पृ. ३५
३. डॉ. रामचंद्र माळी - हिंदी उपन्यासों में दलित चेतना - पृ. ७५
४. जयप्रकाश कर्दम - छप्पर - पृ. ६८